Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-2 | Aug-2014
Available online at www.lbp.world

भिखारी ठाकुर तथा लोक संस्कृति

विकास कुमार
बी0 ए0, एम0 ए0 (इतिहास),
शोध छात्र , ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा.

भूमिका

भिखारी ठाकुर बहुआयामी प्रतिभा के व्यक्ति थे। वे एक ही साथ कवि, गीतकार, नाटककार नाटयनिर्देशक, लोकसंगीतकार और अभिनेता थे। इन सभी क्षेत्रों में उनकी प्रतिभा ऐसी थी कि श्रेष्ठता का क्रम–निर्धारण कठिन है। भिखारी ठाकुर ने जहाँ अपने से पूर्व से चली आ रही परम्परा को आत्मसात् किया था, वही उन्होंने आवश्यकतानुसार उसमें संशोधन–परिवर्द्धन भी किया। भिखारी ठाकुर स्वयं में एक व्यक्ति से बढ़कर एक सांस्कृतिक संस्था थे।

भिखारी ठाकुर के रचना–संसार का लगभग तीन चौथाई कृति उनकी काव्य–रचनाए हैं, जिसमें गीत, भजन–कीर्त्तन, कविताएँ ह। उनकी काव्य–कृतियों में काव्य के सभी रस विद्यमान हैः किन्तु उनका मन जितना विप्रलम्भ श्रृंगार और भक्ति रस में रमा है, उतना अन्य रसों में नहीं। उनके गीत लोकसंगीत के ताल, लय और आरोह–अवरोह में बँधे होने के कारण गेय और प्रभावी हैं। उन्होंने लोकसंगीत की प्रचलित अधिसंख्य लय–विधाओं में गीतों का विन्यास किया है, जिसमें कजरी, होी, चैता, चौबोला, बारहमासा, सोहर, विवाह–गीत जँतसार, सोरठी, आल्हा पचरा, भजन एवं कीर्त्तन आदि प्रमुख हैं। भिखारी ठाकुर गोस्वामी तुलसीदास को अपना काव्य–गुरु मानते थे और रामचरित मानस जैसी कालजयी कृति को अपना आदर्श ग्रंथ। उन्होंने बड़ी श्रद्धा, विश्वास और भक्ति के साथ रामचरित मानस का आजीवन अध्ययन–मनन किया था और वह ग्रंथ उनके भीतर बहुत गहरे उतर गया था। इसके अतिरिक्त सूरदास और अन्य भक्त कवि भी उनके प्रिय थे। उन्हें तुलसीदास, सूरदास मीरा रहीम रसखान ग्वाल और कबीर आदि की अधिसंख्य रचनाएँ जिह्वाग्र थीं। भिखारी ठाकुर को काव्यशास्त्र की विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। उन्होंने अपनी काव्य–रचना में जो चौपाई, दोहा, कवित्त, सवैया, चौबोला आदि की रचना की, उसमें उन्होंने इसके शास्त्रीय व्याकरण की अपेक्षा अनुकरण, लय गति, यति और राम–विन्यास पर अधिक बल दिया। यह उनकी सीमाएँ थीं। इसलिए भिखारी ठाकुर के काव्य में काव्यशास्त्रीय मानकों की खोज करना और उसके आधार पर उनकी रचनाओं को घटिया कहना–मनना और उपहास करना महज विवेकहीनता एवं निर्दयता होगी; फिर भी, उनके काव्य में बिम्बो–प्रतीकों के अलावे उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीक अप्रस्तुत प्रशंसा, अवहृति आदि काव्यालंकारों की छटा देखना एक मनोहारी विषय है। अन्तःतुक और तुकान्त के प्रति भिखारी ठाकुर मोह की सीमा तक चले गये हैं। इनकी कविता काव्य–गुणों से समन्वित है। सुरीली आवाज में इन्हें श्रवण करना एक मनोरम अनुभव है। तोड़ टुकड़ा आदि संगीत के सभी तत्त्व–ताल चलन आरोह अवरोह अनुभव आदि का भरपुर समन्वय इनके काव्य की विशेषताएँ हैं। इस दृष्टि से भिखारी ठाकुर के काव्य–सौष्ठव की पड़ताल करने का प्रयास किया गया है।

भिखारी ठाकुर ने नाटकों की रचना की। तत्कालीन समाज में व्याप्त प्रमुख समस्याओं को भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों का विषय बनाया। भिखारी ठाकुर ने अपने जीवन के प्रारंभिक तीस वर्षो में बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश, नेपाल आदि में प्रचलित लोकनाटक की लगभग सभी विधाओं का बड़े मनोयोग से अध्ययन किया था और उनके मंचन का सूक्ष्मता से अवलोकन किया था। रामलीला, जात्रा, भांड़, धोबी, नेटुआ, गोड़ आदि लोकप्रिय थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित एवं मंचित नाटक की जन–मानस में अपना स्थान बना रहे थे भिखारी ठाकुर ने इन सभी से प्रभाव ग्रहण किया और इन सभी को समेकित कर अपने नाटकों की रचना की उन्होंने अपने नाटकों में पद्य–संबाद के अलावे सरल, छोटे और प्रभावशाली गद्य–संवादों का सृजन किया और नाटकों को नाटय गीतों से सुहावना बनाया। भिखारी ठाकुर ने परम्परागत नाट्यशैली से सूत्रधार, मंगलाचरण तथा अन्य रूढ़ियों को भी कुछ ढीले–ढ़ाले ढंग से स्वीकार किया और विदूषक के बदले 'लबार' जैसे पात्र का मनोरंजनार्थ सृजन किया। मंचीय व्यवस्था तथा साज–सज्जा संबंधी नाट्यलेखकीय निर्देशों को मंचन–व्यवस्था की स्थानीय सुविधा पर छोड़कर भिखारी ठाकुर ने मुक्त मंचन को प्रोत्साहित किया।

भिखारी ठाकुर ने समाज के उपेक्षित एवं दलित–शोषित वर्ग से कलावंत व्यक्तियों का चयन किया। उन्होंने नाट्याभिनय, गायन एवं वादन का विधिवत् प्रशिक्षण दिया। वर्ष के दो माह–सावन–भादो यानि जुलाई–अगस्त सभी कलाकार, गायक और वादक एक स्थान–विशेष–अधिकतर सारण जिला स्थित चन्दनपुर गाँव में स्व. बाबूलाल के दलान पर आवासीय व्यवस्था में प्रशिक्षण–शिवि में रहते थे और वही उन्हें विभिन्न नाटकों में अभिनय, गायन, वादन, नृत्य आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। भिखारी ठाकुर मण्डली के सदस्य विभिन्न नाटकों के विभिन्न पात्रों के संवाद याद करते थे और अभिनय करते थे। गायकों और बादकों के बीच ताल–लय का सामंजस्य बैठाया जाता था और उसको नृत्य के साथ समंजित किया जाता था। विभिन्न नाटकों में सूत्रधार के विशिष्ट वेश–भूषा में तो भिखारी स्वयं आते थे, प्रवचन करते थे और भजन आदि प्रस्तुत कर वातावरण का निर्माण करते थे; किंतु विभिन्न नाटकों में वे अभिनेता के रूप में भी आते थे; जैसे–बिदेसिया में बटोही गबरघिचोर में पंच बेटी वियोग में पण्डित राधेश्याम बहार में बूढ़ी सखी तथा कलियुग–प्रेम में नशाखोर पति आदि। उनका अभिनय अनुकरणीय होता था। वे कलाकारों के प्रशिक्षण के क्रम में संवादों के प्रस्तुतीकरण के प्रभावी होने के गूर भी अपने कलाकारों को बताते थे। उनकी श्रवण–शक्ति मन, मस्तिष्क की एकाग्रता तथा लयात्मकता इतनी थी कि जब कहीं कोई गायक, वादक या नर्तक बेताला या बेसुरा होता था, तो वे कहीं बिगड़ जाते थे और आवश्यक सुधार करा देते थे।

भिखारी ठाकुर ने अपने तमासों (लोकनाटकों) के प्रस्तुतीकरण में भी नये–नये प्रयोग किये। भिखारी ठाकुर के नाटकों की प्रस्तुति के समय किसी खाली मैदान, बगीचा या दालान के सामने शमियाना लग जाता था। कुछ समतल चैकियाँ आपस में सटा–सटा कर रख दी जाती थीं और उसपर दरी और सफेदा (बड़े आकार की उजली चादर) बिछा दी जाती थी। मंच के पीछे कनात या सफेदी टाँग दिया जाता था। मंच पर दायीं ओर वाद्य–वृंद के साथ सभी वादक स्थान ग्रहण कर लेते थे। सम्पन्न होने वाले नाटक के सभी पात्र (अभिनेता) मंच पर अपनी पुरी वेश–भूषा में आकर बैठ जाते थे। मंच के तीन ओर दूर–दूर तक दर्शक–श्रोता बैठ जाते थे। पेट्रोमैक्स, डे लाईट जला कर स्थान–स्थान पर टांग दिये जाते थे और तब लोक कलाकार भिखारी ठाकुर सुत्रधार की भूमिक में मंच पर पधारते थे। यह खुला मंच का प्रयोग भिखारी ठाकुर ने संभवतः विश्व में पहली बार किया था। साथ ही साथ नाटक के प्रस्तुतीकरण के क्रम में जब–तब दर्शकों से अभिनेताओं का सामयिक, प्रासंगिक एवं विनोदात्मक संवाद भी होता रहता था, जो नाटय प्रस्तुति में दर्शकों की सार्थक एवं सक्रिय भागीदारी का विरल उदाहरण प्रस्तुत करता था। फिर भी, दर्शकों में इतना अनुशासन था कि एक बड़ी संख्या के दर्शकों को नियंत्रित करने के लिए किसी पुलिसिया व्यवस्था की आवश्यकता कभी नहीं पड़ी। भिखारी ठाकुर ने नवयुवक कलाकारों को नारी–वेश में नाटक के नारी–पात्रों की भूमिका अदा करने का सफल प्रयोग भी किया, जिससे नाटकों की तत्कालीन मंचीय प्रदर्शन कीि बहुत बड़ी समस्या का समाधान संभव हुआ। इसके अतिरिक्त भी काल और स्थान आदि के

अन्तर को भी सांकेतिरु रूप में प्रदर्शित करने में उन्हें सफलता मिली। प्रारंभिक दिनों में बिना ध्वनि–विस्तारक यंत्र के ही उनके अभिनेताओं के संवाद एवं गीत रात की निःशब्दता में पाँच–पाँच किलोमीटर तक सुने जाते थे। भिखारी एक सफल रंगकर्मी और नाटय संयोजक बनाये गये।

भिखारी ठाकुर को भारतीय सभ्यता और संस्कृति में बड़ी आस्था थी। वे व्यक्तिगत आचार–व्यवहार था। सामाजिक आदान–प्रदान में उन सांस्कृतिक परम्पराओं का पालन करते थे। विनयशीलता, मृदुभाषिता और ईमानदारी उनके ऐसे शिष्ट गुण थे, जिसकी सामाजिक प्रशंसा थी। वे अपने परिवार, मित्र–मण्डली, नाटकों के कलाकारों तथा अपने प्रतिपालकों के बीच बड़े प्रिय थे। वे संबंधों के निर्वाह में अप्रतिम थे। वर्ण–व्यवस्था की त्रासदी को स्वयं भोगते हुए भी वे उसमें विश्वास करते थे। शोषित, दलित नारी तथा गरीबों के ऊपर हो रहे अत्याचार के प्रति वे दुखी थे और उनकी मुक्ति के लिए उन्होंने आजीवन प्रयत्न किया; किन्तु वे कबीरदास की तरह क्रांतिकारी तेवर नहीं अपनाते; बल्कि चेतना विकसित करने में विश्वास करते थे। संभवतः वे इसे ही सामाजिक परिवर्तन का आत्मगत साधन मानते थे, इसीलिये वे अपने तमासों के साथ नगरों–महानगरों के अलावे दूर–दूर तक फैले गाँव–गँवई भी जाते रहे और चेतना का संदेश फैलाते रहे।

भिखारी ठाकुर के इस स्वभाव का कई बार बुरा अनुभव भी उन्हें मिला। फिल्म बनानेवाले एक धूर्त्त निर्माता ने बिदेसिया नाटक पर फिल्म बनाने का अनुबंध किया। मुंबई बुलाकर एक गीत का ध्वन्यांकन किया और इन्हें लौटने का रेल–किराया भर थमा कर ठग दिया। कहानी बदल दी और इन्हें यथोचित पारिश्रमिक भी नहीं दिया।

भिखारी ठाकुरः लोक संस्कृति तथा भक्ति–भावनाः

भिखारी ठाकुर मूलतः राम–भक्त थे। उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास को अपना काव्य–गुरू और रामचरित मानस को अपना आधार–ग्रंथ बनाया था। रामलीला और जात्रा देखने से उन्हें प्रेरणा मिली थी। वे प्रारंभ में स्वयं रामलीला करते थे और उसमें बाबू रामानन्द सिंह तथा अन्य मित्रों के साथ अभिनय भी करते थे। वे केवल राम–नाम को ही मुक्ति का माध्यम मानते थे। राम के विविध रूपों के विशद् प्रसंग उनके काव्य में दर्शनीय हैं।

भिखारी ठाकुर ने श्रीकृष्ण और उनकी बाल–लीला और रास–लीला को भी अपने काव्य का विषय बनाया है और राधेश्याम बहार तथा कृष्ण विषयक भजन–कीर्त्तन में उन्हें बड़े मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया है। कहीं–कहीं तो वे सूरदास के समकक्ष दिखते हैं।

शिव–विवाह में शिव तथा अन्य स्थानों पर गणेश देवी ग्राम–देवता आदि के प्रति भी उनकी भक्ति दिखलाई पड़ती है। भिखारी ने माता को भी जीवित और साक्षात् देवी के रूप में पूजने का नया अध्याय भक्ति–भावना में जोड़ा है।

भिखारी साधु संत गुरू आदि के प्रति भी विनयावत हैं। तद्युगीन मिरचइया बाबा के भी वे प्रिय भक्त थे। वे सत्संग को मानव–उत्थान का साधन मानते हैं यह उनकी आध्यात्मिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण माध्यम रहा है।

भिखारी ठाकुर के काल में विभिन्न सुधारकों और संगठनों ने सामाजिक–आर्थिक परिवर्त्तनों के लिए जन–चेतना जाग्रत करने के लिए भजन–कीर्त्तन और प्रवचन का सहारा लिया था। मास्टर अजीज और भिखारी ठाकुर ने भी जन–चेतना विकसित करने के लिए भक्ति का सहारा लिया। यह इस युग की एक विवशता भी थी।

बिदेसिया

गाँव का एक युवक। मझोला कद, गेंहुआ रंग, धोती–कुरता और टोपी पहनावा खेतिहर मजदूर। वर्ष के कुछ ही दिनों काम मिलता है, शेष समय में बेरोजगार रहता है। उसकी शादी एक सांवली–सलोनी

सुंदर युवती से हो जाती है। विवाह के कुछ दिनों बाद तक काम मिलता है, शेष समय में बेरोजागार रहता है। उसकी शादी एक सांवली–सलोनी सुंदर युवती से हो जाती। विवाह के कुछ दिनों बाद वह युवक अपनी प्यारी पत्नी का द्विरागमन (गवना) करा कर अपने घर ले आता है। पति–पत्नी में बहुत प्रेम रहता है। वह अपनी पत्नी के रूप–लावण्य एवं परस्पर प्रेम के कारण उसे 'प्यारी सुंदरी' नाम से ही संबोधित करता है।

कुछ दिन तो सुख–चैन से बीतते हैं, लम्बी बेरोजगारी और बिगड़ती आर्थिक स्थिति युवक के मन–मस्तिष्क को बराबर उद्विग्न करता रहता है। दूसरी ओर गाँव तथा आस–पास के युवक और अधेड़ उम्र के लोक कृषि–कार्य के अभाव में काम कर कुछ कमाने के लिए कलकत्ता तथा आसाम आदि पूर्व स्थित राज्यों में जाते–आते रहते हैं और धन बचाकर घर लौट आते हैं। युवक भी सोचना है कि वह कलकत्ता जाकर मेहनत–मजदूरी कर कुछ धन कमाये और फिर घर लौटकर अपनी पत्नी प्यारी सुंदरी के साथ रहकर मौज–मस्ती करे।

युवक अपनी पत्नी प्यारी सुंदरी से अपना कलकत्ता जाने का प्रस्ताव रखता है। युवती आशंकित एवं विचलित हो जाती है। वह इस प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करती है। तब वह बहाना बनाकर घर से चुपचाप भाग कर कलकत्ता जाने का मन बना लेता है।

युवक कलकत्ता पहुँच जाता है। वहाँ जाकर वह परदेशी विदेसी बन जाता है। दिन भर कड़ी मेहनत–मजदूरी कर धन कमाता है।

अचानक उसका परिचय, एक युवती से हो जाता है। एकाकी युवक की कामनाएँ प्रबल होने लगती हैं युवती भी दिनोदिन उसके पास आती जाती है। उभ पक्ष की आवश्यकता तथा परिस्थिति की नाजुकता के कारण दोनों पति–पत्नी के रूप में रहने लगते हैं। उसे तत्कालीन समाज रखैल रखेलिन या रंडी ही समझता है। बिदेसी दिन भर मजदूरी करता है और शाम को तथा छुट्टियों में दिनभर उसी महिला के साथ मौज–मस्ती मे रहता है। ताश खेलती है। युवती खाना बनाती है और मिलजुल कर चैन से जिन्दगी बीतती है।

गाँव में बिदेसी की पत्नी सुंदरी को जब यह बोध होता है कि उसका पति बिना उसकी सहमति उसे अकेली छोड़कर कलकत्ता कमाने चला गया, जो उसके सिर पर जैसे विपत्तियों का पहाड़ ही टूट पड़ता है। वह दिन–रात रोती–कलपती रहती है। अपने पति के वियोग में तरह–तरह से विलाप करती रहती है। कभी उसे अपने पति के साथ रहते समय की घटनाओं की याद आती है; कभी पति का परदेश में क्या हाल होगा, इसको सोच–सोच कर बिलखती है और कभी अपने एकाकीपन तथा पत्नी–सुलभ कामनाओं के वशीभूत हो विचलित हो जाती है। उसे दृढ़ विश्वास है कि उसका पति अवश्य लौटेगा।

अचानक एक दिन एक अधेड़ बटोही, जो कमाने के लिए कलकत्ता जा रहा था, बिदेसी की पत्नी प्यारी सुंदरी के विलाप से दर्यार्द्र हो जाता है और उसके कष्ट एवं दुःख को समझाकर उसके पति को खोजकर वापस भेजने का आश्वासन उसे देता है।

कलकत्ता पहुँचने के बाद–घूमने–फिरने के क्रम में बटोही की दृष्टि सुंदरी के अपने पति के बताये के विवरण से मिलते–जुलते एक युवक पर अचानक पड़ जाती है और बटोही उसे समझाता–बुझाता है, उसकी पत्नी की दारूण दशा का वर्णन करता है तथा उसके अखंडित पातिव्रत्य की पुष्टि करता है। बिदेशी की स्मृतियाँ लौट जाती हैं और वह घर वापस लौटने की बात सोचने लगता है।

कलकत्ता में अपनी पत्नी के रूप में रखी गई महिला बिदेशी की इस योजना का विरोध करती हैः किन्तु, बटोही के समझाने, डराने और विवश करने पर बिदेसी घर की राह पकड़ता है। बाड़ीवाला (मकान–मालिक), साहूकार और गुण्डों द्वारा बिदेशी के बकाये की वसूली में सब सामान एवं कपड़े छीन लिये जाते हैं; फिर भी, वह उसी दुरावस्था में घर लौटता है।

इसी बीच गाँव का एक मनचला युवक, जिसकी आयु बिदेसी से कम थी, प्यारी सुंदरी के पातिव्रर्त्य की परीक्षा लेने के लिए तरह–तरह के प्रलोभन देता है और बलात्कार करने का चेष्टा करता है। प्यारी

सुंदरी दृढ़ता से प्रतिवाद करती है तथा पड़ोसिन के आ जाने के कारण उस का सतीत्व बच जाता है। वह देवर बना मनचला युवक भाग खड़ा होता है।

इसी समय अपनी दुरवस्था की स्थिति में बिदेसी अपने घर पहुँचता है। बहुत विश्वास दिलाने पर और अपने पति की आवाज पहचान कर सुंदरी दरवाजा खोलती है और परदेशी पति को देखकर एक ओर प्रसन्न होती है, तो दूसरी ओर उनकी इस दशा पर स्तम्भिव हो जाती है। समाचार पूछने का क्रम पति–पत्नी में चलता है।

इसी बीच बिदेसी के कलकत्ता छोड़कर घर जाने की बात सोचकर उसकी कलकतिया पत्नी और दोनों बच्चे बिदेसी के घर के लिए पूरी गहने–कपड़े एवं सामान के साथ घर निकलते हैं। कलकत्ता के चोर–डकैत उसके गहने–कपड़े छीन लेते हैं। विपन्नावस्था में भी वह महिला अपने दोनों पुत्रों के साथ कलकत्ता से बिदेसी के घर के लिए चल देती है। पूछते–पूछते वह बिदेसी के घर पर पहुँचती है। बिदेसी उसको देखकर आश्चर्यचकित होता है ; किन्तु वह महिला जब प्यारी सुंदरी के साथ रहने का अनुनय–विनय करती है, तो सब मिल–जुलकर रहने लगते हैं।

निष्कर्ष–

भिखारी ठाकुर अपने सामाजिक अपमान से काफी दुःखी रहते थे। कई बार उन्होंने अपनी रचनाओं में इसका विरोध किया है। कई नकलची लोगों ने उनकी कृतियों को प्रकाशित कर धन कमाया और उन्हें बदनाम किया। इसको भी उन्होंने बड़े विनोदपूर्ण ढंग से अपनी रचनाओं में अंकित किया है। भिखारी ठाकुर अश्लीलता और समाज की पतनशील प्रवृत्तियों के सदा विरूद्ध रहे और उन्होंने उसके विरूद्ध संघर्ष भी किये। उनका व्यक्तित्व मात्र सांस्कृतिक भी नहीं था; बल्कि वे स्वयं सांस्कृतिक संस्था थे।

संदर्भः–

1. संपादक–नागेन्द्र प्रसाद सिंह, भिखारी ठाकुर रचनावली, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 2005, पृ0 8
2. वही, पृ0 9
3. वही, पृ0 10
4. वही, पृ0 10
5. वही, पृ0 11
6. संपादक–नागेन्द्र प्रसाद सिंह तथा डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र, भिखारी ठाकुर रचनावली, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, सैदपुर, पटना, 2005, पृ0 11
7. वही, पृ0 11
8. वही, पृ0 11
9. दुर्गाशंकर प्रसाद, भिखारी ठाकुर की काव्य रचना, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 1985, पृ0 74
10. वही, पृ0 142
11. संपादक–नागेन्द्र प्रसाद सिंह तथा डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र, भिखरी ठाकुर रचनावली, बिहार राष्ट्रभाषा, परिषद्, सैदपुर, पटना, 2005, पृ0 211
12. दुर्गाशंकर प्रसाद, भिखारी ठाकुर की काव्य रचना, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 1985, पृ0 162
13. वही, पृ0 162
14. वही, पृ0 86
15. श्यामा प्रसाद, भिखारी ठाकुर की काव्य रचना, गीता भवन पब्लिकेशन्स, मेरठ, 1985, पृ0 99
16. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी साहित्य का इतिहास, गोलोक प्रकाशन, मेरठ, 1906, पृ0 46
17. वही, पृ0 183